Current Global Reviewer

UGC Approved International Research Refereed Journal For All Subjects & All Languages

ISSN 2319-8648 | **Impact Factor - 2.143** | **Indexed (IIJIF)** | UGC Approved Sr. No. 64310

SPECIAL ISSUE

26 April, 2018 , Issue: I Vol. II

समकालीन हिंदी साहित्य और संस्कृति

प्रमुख संपादक

प्राचार्य डॉ. जी. एच. जाधव

श्री छत्रपती शिवाजी महाविद्यालय, उमरगा, जि. उस्मानाबाद

संपादक

Organised By

Dept. of Hindi

Shri Chhatrapati Shivaji College, Omerga, Dist. Osmanabad

www.rjournals.co.in

CURRENT GLOBAL REVIEWER
Special Issue
Issue I Vol II, 26 April 2018
UGC Approved
Sr. No. 64310
ISSN : 2319 - 8648
Impact Factor : 2.143

Index

Sr. No.	Title of Article	Author	Page No.
१	समकालीन हिन्दी साहित्य में दलित विमर्श	डॉ. किशोरसिंह सोलंकी	१
२	दलित साहित्य की मूल संवेदना	डॉ. बोईनवाड एन. एन.	6
३	आधुनिक हिन्दी कविता में दलित चेतना	डॉ.सौ. कठारे एम.एस.	9
४	समकालीन हिन्दी साहित्य में दलित विमर्श (ओमप्रकाश वाल्मीकि की पच्चीस चौका डेढ सौ कहानी में दलित विमर्श)	डॉ.जे.सेन्दामरै	13
५	समकालीन हिंदी साहित्य में दलित विमर्श	प्रा. डॉ. येल्लूरे एम. ए.	16
६	समकालीन हिंदी साहित्य में दलित जीवन का चित्रण 'अपने अपने पिंजरे' के परिप्रेक्ष्य में	प्रा. डॉ. एस. बी. तांबोळी	19
७	दलित सहित्य के प्रेरणा स्त्रोत-डॉ.भीमराव आंबेडकर	डॉ.डमरे मोहन मुंजाभाऊ	32
८	'जूठन' में चित्रित घुटन	डॉ. सुभाव नामदेव जाधव	36
९	समकालीन दलित कहानियों में स्त्री विमर्श	डॉ. भारती पमुलवाड	39
१०	समकालीन हिंदी उपन्यासों में आदिवासी विमर्श (राकेश वत्स के 'जंगल के आसपास' उपन्यास के विशेष संदर्भ में)	प्रा.डॉ.ए.ने.बेवले	43
११	हिंदी साहित्य में आदिवासी विमर्श	प्रा.डॉ.सौ.सुरैया इसुफअल्ली शेख	47
१२	महिला उपन्यासकार और नारी विमर्श	प्रा. डॉ. रमेश आडे	51
१३	इक्कीसवीं सदी के प्रथम दशक के हिंदी आदिवासी उपन्यास और स्त्री विम्ब	डॉ. सन्मुख नागनाथ मुच्छटे	56
१४	दलित नारी : एक विमर्श	डॉ. अमिता	60
१५	हिन्दी दलित कविता विमर्श	प्रा. डॉ. रमेश कांबळे	64
१६	समकालीन हिंदी कविता	डॉ. दत्ता शिवराम साकोळे	65

CURRENT GLOBAL REVIEWER
Special Issue
Issue I Vol II, 26 April 2018
UGC Approved
Sr. No. 64310
ISSN : 2319 - 8648
Impact Factor : 2.143

समकालीन दलित कहानियों में स्त्री विमर्श

डॉ. भारती पमुलवाड
हिंदी विभाग, बलभीम महाविद्यालय, बीड

--------- (9) ----------

भारतीय संस्कृति का मूल ढाँचा वर्ण-व्यवस्था, जातिवाद एवं ऊँच-नीचता के भेद-भाव पर आधारित है। इसी कारण समाज का एक बहुत बड़ा वर्ग सदियों से उपेक्षित रहा है। मनुष्य होने के बावजूद समाज व्यवस्था ने उसे पशु-तुल्य जिंदगी जीने के लिए विवश कर दिया है। सभी तरह की सुख सुविधाओं पर एकाधिकार स्थापित कर समाज के कथित उच्च वर्ग ने कभी नस्ल के नाम पर, तो कभी जाति के नाम पर अपने अहं को पुष्ट बनाए रखा है। समय-समय पर अनेक भक्त संतों ने इस प्रवृत्ति पर प्रहार कर उसे तोड़ने की कोशिश की है, परंतु यह प्रवृत्ति आज भी अपना अस्तित्व बनाए हुए है। भारतीय समाज व्यवस्था में चतुर्थ वर्ण को शूद्र, अस्पृश्य, हरिजन और आज दलित नाम से अभिहित किया जाता है। इस चतुर्थ वर्ण को समाज व्यवस्था ने इतना उपेक्षित, तिरस्कृत किया कि प्रतिक्रिया स्वरूप वे अपनी जुबान भी नहीं खोल सके। उनके लिए वेदों का पठन-पाठन तो दूर श्रवण तक भी वर्ज्य था। ऐसी व्यवस्था में वेदना का प्रस्फुटित स्वर दलित साहित्य है।

'दलित' शब्द का अर्थ मसला हुआ, मर्दित, दबाया हुआ, रौंदा गया, कुचला हुआ, वंचित, खंडित, अस्पृश्य, शूद्र आदि। सामाजिक विचारधारा के अनुसार आर्थिक एवं सामाजिक दृष्टि से जो वर्ग दबा हुआ, कुचला हुआ है या शोषित है उस वर्ग को दलित वर्ग और उसकी चित्रित व्यथा का साहित्य ही दलित साहित्य है। कुछ लोग दलित के अंतर्गत केवल अस्पृश्य जाति का ही अंतर्भाव करते है, तो कुछ लोग उसकी व्याप्ति बढाकर कहते हैं कि जिसका भी मर्दन हुआ है, जिसको भी सुविधाओं से वंचित रखा गया है, जो व्यवस्था के पैरों तले रौंदा गया है, वे सभी दलित हैं, चाहे वे दलितेत्तर क्यों न हों। पर सामाजिक व्यवस्था में जब हम देखते हैं कि एक निर्धन ब्राम्हण या गैरदलित को जो सामाजिक प्रतिष्ठा है वह दलित को नहीं, भले ही वह अमीर हो।

दलित का अर्थ समाज के दबे-कुचले वर्ग से लिया जाता है। दलित वर्ग, अनुसूचित पिछड़ी जातियों के लिए दी गई व्यापक संज्ञा है। हिंदू धर्म ने जिन्हें बहिष्कृत किया था, अपनी ग्रामव्यवस्था के बाहर रखा था, जिनपर सदियों से अन्याय किया था, मनुष्य के रुप में जीने का अधिकार जिनसे छीन लिया गया था वे सभी लोग 'दलित' है। उनकी अपनी विशेष उप-संस्कृति है। इसी उपसंस्कृति में जिनका जन्म हुआ है और जो इस उपसंस्कृति को सभी बारीकियों के साथ जानते हैं वे दलित जिस साहित्य की रचना करते हैं वह दलित साहित्य है।

दलित चेतना का तात्पर्य अनुसूचित जाति के युवकों में अन्याय, शोषण, वर्गभेद, जातिभेद के विरुध्द चेतना जागृत होने से लिया जाता है। वास्तविकता यह हैं कि दलित वर्ग के अंतर्गत शोषित वर्ग के साथ-साथ आदिवासी, खेतिहर मजदूर, गरीब किसानों को भी सम्मिलित किया गया है भले ही वे किसी जाति के हो। दलित का तात्पर्य समाज के उस पददलित वर्ग से है जिसे सदियों से 'अछूत' कहकर उपेक्षित किया गया, हर प्रकार से उसका शोषण किया गया, उसे कोई अधिकार नहीं दिए गए, शिक्षा से वह वंचित रहा और उसकी इच्छा शक्ति को पनपने नहीं दिया गया।

उसने बेहिचक कह दिया- "नहीं भैया यह बडे लागों के चोचले हैं | आज सब को दिखाने के लिए हमारी बेटी के साथ शादी कर लेंगे और कल छोड दिया तो हम गरीब लोग उसका क्या कर लेंगे? उनकी दिखावे की चार दिन की इज्जत हमें नहीं चाहिए |"[1]

दलितों में 'निजत्व' या 'स्वत्व' की भावना का विकास याने युग की माँग के अनुरूप और अपेक्षित परिवर्तन कहना होगा | इस दलितोत्थान हेतु अब तक के किए गए सारे प्रयासों का फल मानना होगा | सिलिया (सुशीला टाकभौरे) कहानी की नायिका दलित युवती सिलिया ने दलित लडकी मालती द्वारा सवर्णों के कुएँ से पानी लेकर अपनी प्यास बुझाने पर जो घमासान प्रकरण खडा हुआ था उसे अपनी आँखों से दखा था | बुरी तरह से पिटाई होने पर चीख-चीख कर रोयी हुई मालती को वह कहाँ भूल पाई थी | सिलिया की सहपाठीन हेमलता ठाकूर की बहन के ससुराल में सिलिया और हेमलता का स्वागत तो हुआ किंतु सिलिया की जाति मालूम होने पर पानी देने आई मौसी पानी का गिलास लेकर वापिस अंदर चली गई | सिलिया के पास दलितों से सवर्णों के व्यवहारों के अनुभवों की कहाँ कमी थी? फलत: वह उच्च कुल के नेता सेठी जी द्वारा दिए गए दलित कन्या से विवाह विषय विज्ञापन को ढोंग और आडंबर समझती है | दलित-नारी को अब दूसरों के शतरंज का मोहरा बनकर निजत्व को खोना और बैसाखियों पर चलना उचित नहीं लगता | आत्मसम्मान की चेतना के कारण ही सिलिया सोचती है - "हम क्या इतने भी लाचार हैं, आत्मसम्मान रहित हैं, हमारा अपना भी तो कुछ अहं भाव है | उन्हें हमारी जरुरत हैं, हमको उनकी जरुरत नहीं | हम उनके भरोसे क्यों रहें | अपना सम्मान हम खुद बढायेंगे |"[2]

आत्मचेतना और स्वाभिमान के फलस्वरुप दलितों में संकल्पों की शक्ति परिलक्षित होती है | सिलिया का यह दृढ संकल्प है कि - "मैं बहुत आगे तक पढाई करुँगी पढती रहूँगी, शिक्षा के साथ अपने व्यक्तित्व को भी बडा बनाऊँगी उन सभी परंपराओं के कारणों का पता लगाएगी जिन्होंने उन्हें अछूत बना दिया हैं |"[3] कहना होगा कि शिक्षा, विवेक और बुध्दि के बल पर दलित अब न झुकना चाहता है और न अपमान सहना !

मोहनदास नैमिशराय की 'अपना गाँव' कहानी दलितों पर किए गए असीम अत्याचार को प्रस्तुत करती है | दलित महिला कबूतरी को ठाकुर के मंझले बेटे ने सारे गाँव में इसलिए नंगा करके घुमाया कि उसका पति संपत ठाकुर से पाँच सौ रुपये कर्जा लेकर गया जिसे कबूतरी चुका नहीं सकी | लेकिन गाँव में इस घटना का विरोध करने की हिम्मत किसी ने नहीं की | ताकि दलितों पर अत्याचार करने का अधिकार गाँव के सवर्ण समाज को परम्परागत रुप में ही मिला है | 'अपना गाँव' कहानी दलितों पर हुए अत्याचारों की दर्दनाक अभिव्यक्ति है | अपनी पत्नी को नंगा कर गाँव में जुलूस निकालनेवाले (ठाकुरों) के खिलाफ पुलिस में शिकायत करने के लिए गए दलित युवक सपंत और उसके साथियों को पुलिस की ओर से न्याय की अपेक्षा लातें, घूँसे और डंडे से मार-पीट मिली | न्याय की माँग करने हेतु गए दलितों को पुलिस थाने में ही बंद किया गया | 'अत्याचारी' ठाकुर को गिरफ्तार करने की अपेक्षा 'अत्याचारित' दलितों को दंडित करनेवाले पुलिस इन्सपेक्टर का यह कथन कि - "स्सालों चमारों, अब तुम्हें जबान लडाना भी आ गया | एक-एक की गाँड में मैंने डंडा न चढाया तो मेरा नाम एस.पी. त्यागी नहीं |"[4] न केवल सामाजिक बल्कि प्रशासनिक व्यवस्था के पतन पर भी प्रकाश डालने के लिए पर्याप्त है | इसी कहानी में एक दलित ने उस ठाकुर के खेत में उस दलित को पिछले पाँच सालों से काम पर जाना पडता है और उसकी घरवाली को ठाकुर की हवेली पर काम करना पडता है | पहले 'ना' कहनेवाली यह दलित नारी ठाकूर की आधी घरवाली बनाई जाती है |

ओमप्रकाश वाल्मिकि लिखित 'यह अंत नही' कहानी दलित युवती बिरमा पर हुए अत्याचार के लिए कारणीभूत जातिवादी प्रवृत्तियों और पुरुष वर्चस्ववादी मानसिकता पर प्रकाश डालती है | 'यह अंत नहीं' कहानी में मंगलू, सरबती और उनकी बेटी बिरमा सभी तेजभान के खेतों में धान काटने का काम करते है | शाम होने के कारण बिरमा सर पर धान का गट्ठर उठाए घर की ओर चल पडी | उसने महसूस किया कि तेजभान का बेटा सचीन्दर उसे निरंतर घुर रहा था | सचीन्दर ने बीच में ही बिरमा का रास्ता रोक लिया और वह उसके शरीर से उलझने लगा और बडी बेशर्मी बेहयायी से बोलता है सिर पर इतना बोझ है, थक गई होगी | थोडा सा सुस्ता ले... यह कहते हुए उसने बेशरमी से बिरमा के गालों को छुआ और उसके हाथ बिरमा के सीने की ओर बढ रहे थे | वैसे बिरमा ने सचीन्दर के जांघों के बीच लात से भरपूर प्रहार किया था | घर लौटकर माँ-बापू के मना करने पर अनपढ बिरमा ने अपने शिक्षित भाई किसन को सारी घटना सुना दी थी | वह चाहती थी कि उसके साथ किए गए अन्याय की सजा शोषक सचीन्दर को जरुर मिले | किसन ने ताकतवर तेजभान से सीधा टकराने की बजाय पुलिस से मदद लेनी चाही | रिपोर्ट दर्ज करने के लिए गए किसन को पुलिस इन्सपेक्टर कहता है ः "छेडखानी हुई है....बलात्कार तो नहीं हुआ....तुम लोग बात का बतंगड बना रहे हो | गाँव में राजनीति फैलाकर शांतिभंग करना चाहते हो | मैं अपने इलाके में गुंडागर्दी नहीं होने दूँगा | चलते बनो |"[5] रिपार्ट दर्ज करने से मना करता है | प्रवीण के कहने पर किसन पंचायत में अर्जी करता है, लेकिन किसन इस फैसले से कुछ असहमत था क्योंकि वह जानता था कि पंचायत का प्रधान बिसन सिंह उसकी बिरादरी का दलित होकर भी तेजभान का ही बिठाया हुआ मोहरा है |

पंचायत के फैसले के दिन न आरोपी को बुलाया गया न फरियादी को | बस, सिर्फ फैसला सुनाया गया | भविष्य में ऐसी घटना न हो, इसलिए पंचायत सचीन्दर पर पाँच रुपया जुर्माना करती है | पंचायत के अन्यायपूर्ण फैसले को सुनकर बिरमा ने पंचायती राज की बखियाँ उखाडते हुए कहा-किसन भैया ठीक कहते थे, "पंचायत में नियम ना होता, जात-बिरादी देखी जावे है, गुंडागर्दी होती है, पंचायत के नाम पर... | बिरमा ने सभी को हिम्मत बंधाते कहा | इस हार पर मुँह क्यों लटका रहे हो | ये अंत नही है...तुम लोगों ने मेरे विश्वास को जगाया है...इसे मरने मत देना | उसके भीतर कुछ उबल रहा था जो बाहर आना चाहता था |"[6]

बिरमा के आत्मविश्वास को देखकर सभी दंग थे उसमें जगे आत्मबोध एवं आत्मसम्मान ने सभी को एकजुट होकर संघर्ष करने की शक्ति प्रदान की थी | उन्होंने मिलकर कहा...ना बिरमा ...यह अंत नहीं है तुमने हमे ताकद दी है | हार को जीत में बदलेंगे, लोगों में विश्वास जागकर, ताकि फिर कोई बिसन मोहरा न बने |

समकालीन दलित कहानी साहित्य मे नारी चरित्र विरोध की क्षमता और साहस रखते है, संघर्ष की शक्ति रखते है जिसे डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर की वैचारिक परम्परा का परिणाम कहना होगा |

संदर्भः-

१. स. रमणिका गुप्ता - दूसरी दुनिया का यथार्थ, पृ.१००
२. वही, पृ १०३
३. वही, पृ १०३
४. वही, पृ ७२
५. घुसपैठिये-कहानी संग्रह-यह अंत नहीं, ओमप्रकाश वाल्मिकी, पृ.-२४
६. घुसपैठिये-कहानी संग्रह-यह अंत नहीं, ओमप्रकाश वाल्मिकी, पृ.-२९